षष्ठ अध्याय

'मनुष्य के रूप' उपन्यास का उद्देश्य ।

षष्ठ अध्याय

' मनुष्य के रूप ' उपन्यास का उद्‌देश्य --

उद्‌देश्य --

साहित्य में उपन्यासोंके तत्वोंका उद्‌देश्य यह अत्यावश्यक तत्व माना जाता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी प्रयोजन या उद्‌देश्य को सामने रखकर हर मोडपर कदम उठाता है, निर्णय लेता है। इसीतरह हर साहित्य को प्रस्तुत करने का हर साहित्यिक का एक हेतू, उद्‌देश्य होता है।

' साहित्य समाज का प्रतिबिंब है '

उपन्यास लिखना भी लेखक, उपन्यासकार का उद्‌देश्य होता है। जब साहित्यकार अपने सामने किसी कथा किसीपात्रों, और जीवन के रहस्योंका जान जाता है तो अपने निजी अनुभव और कल्पनाशक्ति के द्वारा समाज को सजग और जागृत करना चाहता है या फिर परिस्थिति, देशकाल और वातावरण के अनुरुप उसके मश्तिष्क में कुछ कल्पनाएँ उभर आती है, और वे ही कल्पनाएँ दूसरोंके सामने व्यक्त कर वह पाठकों को उस ओर आकृष्ट कर लेता है।

' यशपाल ने भी अपने समस्त उपन्यासकिसी न किसी उद्‌देश्य को सामने रखकर प्रणित किये है। सामाजिक अथवा राजनीतिक विचाराभिव्यक्ति करना यशपाल जी के उपन्यासोंका प्रमुख उद्‌देश्य है। ' [१]

---

१ प्रो. प्रविण नायक - यशपाल का औपन्यासिक शिल्प -पृ. १४९।

'मनुष्य के रूप' उपन्यास के माध्यम से यशपाल जी ने विधवा समस्या, नारी की आत्मनिर्भरता, संघर्षा, इसी विविध समस्याओं का चित्रण समाज के सामने रखने का यत्न किया है। यशपाल जी की दृष्टि में कलाकृति का महत्व उसमें मूर्त सामाजिक सम्बन्धो का है क्योंकि वह साहित्य को पूर्ण रूप से भौतिकवादी मानते है। 'साहित्य समाज की वस्तु है और साहित्य के हितकर होने का अर्थ है वह समाज के लिए हितकर हो।'[१]

१) <u>नारी की प्रेम समस्या</u> --

'मनुष्य के रूप' एक सामाजिक उपन्यास है। इस में यशपाल जी ने नारी प्रेम की समस्या चित्रित की है। इस समस्या को उपन्यास का केन्द्रबिंदू बनाकर कथा की रचना की है।

नारी प्रेम समस्या इस उपन्यास की प्रधान समस्या है। जीवन में प्रेम का क्या स्थान है ? प्रेम के लिए जीवन नही अपितु जीवन के लिए प्रेम है। क्या जीवन में प्रेम का अस्तित्व शाश्वत है ? इस बात को लेकर यशपाल जी ने मार्क्सवादी दृष्टिसे विचार किया है। यशपाल जी का यह स्पष्ट मत है कि, 'प्रेम की गति भी द्वंद्वात्मक है।'[२] उपन्यास में प्रेम का संबंध सोमा, धनसिंह तथा मनोरमा, कॉमरेड भूषाण के साथ जूडा हुआ है। प्रेम की समस्या वास्तव में पहाडन सोमा तथा ड्राइवर धनसिंह के माध्यम से उठायी गयी है। कामरेड भूषाण तथा मनोरमा उपन्यास में प्रेम के पर्यवेक्षाक एवं प्रावक्ता मात्र है। इनदोनों का जीवन किसी महान उद्देश्य के लिए समर्पित है।

सोमा का चरित्र एक ऐसा चरित्र है जो सुख दु:ख से ओतप्रोत है। जिस सोमा ने प्रारंभ में धनसिंह के प्रेम की ओर आकृष्ट हो अपना घर त्याग दिया,

---

१ डॉ. शान्तिस्वरुप गुप्त -यशपाल और उनकी दिव्या -पृ.४।

२ डॉ. सीलम वेंकटेश्वरराव - यशपाल के उपन्यास समस्यामूलक अध्ययन - पृ.१५३।

धनसिंह के सुरक्षा के लिए पुलिस को आत्मसमर्पण किया उसी सोमा ने अन्त में धनसिंह को पहचानने से इन्कार कर दिया । सोमा के जीवन के आदि और अंतिम क्षणों में धनसिंह का प्यार उसके जीवन में सहाय्यक मात्र है ।

यशपाल ने मनोरमा के माध्यम से एक भारतीय नारीका रूप चित्रित किया है । मनोरमा और भूषण के जरिए सच्चे और पवित्र प्रेम पर दृष्टि डाली है। दोनों का प्रेम अंत तक सफल ना हो सका ।

२) नारी शोषण की समस्या --

जब हम शोषण की समस्या पर विचार करते है तो लगता है कि, हमारे समाज में सदा से अधिक शोषण यदि किसी का होता है तो वह है नारी का ही । पुरूष प्रधान समाज ने उसे और ही अबला बना दिया है। ' नारी है क्या ? नारी रूप में वह सभी पुरूषों के सम्मुक भोग्या है । यहि उसका आकर्षण है .... भोग्या । जो भोग्या बनने के लिए उत्पन्न हुअी है । उसके लिए अन्यत्र शरण कहाँ ? ' १ मनुष्य के ' अहंकार ' और ' एकाधिकार की मनोवृत्ति ' के कारण ' नारी-शोषण ' की समस्या तीव्र हुई है । समाज में ' मनुष्य के रूप ' तेजी से बदलते जाते है । महानगरों में फिल्मी व्यवसायों जैसे बडे-बडे प्रतिष्ठानों में नारी का शोषण जिस प्रकार से होता है, पहाडन सोमा के माध्यम से लेखक ने इस बातपर प्रकाश डाला है । बैरिस्टर सरोला ने निराश्रित सोमा को आश्रय दिया, किन्तु इस आश्रय का मूल्य सोमा को अपना शरीर समर्पित करके चुकाना पडा । एक नौकरानी से रानी की तरह अधिकार मिले । सोमा में उन्हें नाराज करने की क्षमता नहीं थी । यशपाल जी ने पुरूषाश्रित नारी की विवशता पर व्यंग किया है ।

---

१ यशपाल - दिव्या - पृ.१५५ ।

नारी जीवन की विडम्बना देखी जाये तो बैरिस्टर साहब तो जी मरके सोमा के शरीर के साथ खेलते रहे ,जब घर में सोमा को लेकर तूफान उठा तो बैरिस्टर साहब ने भी सोमा को दगा दे दिया । सड़क के चौराहे पर उसे खड़ा होने के लिए विवश कर दिया । जबउसे घर छोड़ने पर मजबूर किया गया तो अधिकार के नाते ना सही,इन्सानियत के नाते उसे रोक भी नही सके ।

धनी सुतलीवाला एक तरफ नारी की पूर्ण स्वतंत्रता,समानता और सहयोग में अपना विश्वास कर अपने को प्रगतिशील सिध्द करते थे,परन्तु दूसरी ओर अपनी पत्नी मनोरमा को इस दिशा में उत्साहित किया करते थे कि वह बड़े-बड़े सेठों की खातिर कर पाति के व्यवसाय में सहायय करे । समाज के कुचक्र से जागरूक पत्नी ने यह सब कुछ करने से इन्कार कर दिया तो उसपर ' कुल्टा होनेका झूठा आरोप लगा दिया । मनोरमा जैसी पढीलिखी और प्रगतिशील नारीको भी ऐसे सामाजिक मान्यताओं का शिकार बनना पडा ।

लेकिन यशपाल जी यह सिध्द करना चाहते है कि, समाज में नारी की नैतिकता और पावित्रता पर विचार किया जाये तो समाज में चित्रित अनैतिक कार्यों के लिए हमेशा नारी को दोषी नहीं ठहरा सकते । नारी के समस्त दु:खों का मूल कारण है उसकी पुरुषाधीनता - पुरुष प्रधान समाज ने केवल नाम के लिए उसे स्वतंत्रता दे रखी है लेकिन उसके सभी अधिकार पुरुषाधीन है । 'पूँजीवादी समाज में नारी यदि अपने पैरों के बल खडी भी हो जाये तो भी सामाजिक मान्यताओं एवं तज्जन्य संस्कारों के कारण उसे किसी पुरुष का आश्रय या आड स्वीकार करनी ही पड़ती है ।' [१]

प्रेम रहित जीवन निर्जीव है और जीवन में प्रेम का आधिक्य जीवन के लिए घातक सिध्द होता है । सोमा पुरुष वर्ग की मनोप्रवृत्तिपर प्रहार करती है,

---

१ डॉ.पारसनाथ मिश्र - मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल - पृ.२३० ।

'दुनिया भर मेरे गले में बाँह कसकर खेलना चाहती है,परन्तु बाँह थामकर सहारा देने के लिए कोई तैयार नही।'[१] इस पुरूष प्रधान समाज में पति बिना नारी का कोई अस्तित्व नही। रूढिवादी समाज में मान एवं सम्मान पाने के लिए,चाहे पति नाम मात्र का ही क्यों न हो,उसका नाम नारी के साथ जुडा रहना यही आवश्यक है।' फिल्म जगत की अत्यन्त प्रसिध्द अभिनेत्री हो जाने तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता के बाद भी सोमा द्वारा सुतलीवाला का ग्रहण इसी सच्चाई की ओर संकेत करता है। [१]

यशपाल का इस के पीछे यह उद्देश्य रहा है कि, जब तक नारी जागरण द्वारा पूरी सामाजिक व्यवस्था व मानसिकता बदली नहीं जाती, तबतक 'पराधीनता' एवं 'शोषण' जैसे अभिशापों से नारी समाज विमुक्त नहीं हो सकता। पुरूष के अत्याचार और जुल्म से बचने के लिए 'क्रान्ति' की आवश्यकता है।

३) समाज में व्याप्त शोषण की समस्या --

'मनुष्य के रूप' उपन्यास में नारी शोषण की तरह समाज में व्याप्त शोषण की समस्या पर यशपाल जी ने गहरा कुठाराघात किया है। पूँजीवादी तथा पुरूषप्रधान समाज के संस्कार में 'शोषण' एक ऐसा प्रबल अस्त्र है, यह 'शोषण' किसी क्षेत्रविशेष में न होकर समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। समाज का बटवारा हमेशा दो वर्गों में किया जाता है। एक शोषक और दूसरा शोषित। जैसे समाज व्यवस्था में हर तरह से नारीका शोषण होता है,उसी प्रकार मालिक अपने मजदूर के हक पर अपना अधिकार जमा बैठता है और मजदूर

---

१ डॉ.पारसनाथ मिश्र - मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल -पृ.२३०।

मालिक को अपना अन्नदाता समझाने की भूल कर अपने स्वतंत्र के सारे अधिकार गवाँ बैठता है और मालिक के बंधनो से जकडे अपने किस्मत को कोसता रहता है लेकिन मुक्ति पाना असंभव है।

४) परिवार में शोषाण की समस्या --

अपने पुत्र के विवाह का कर्जा चुकाने के लिए सोमा के बाप द्वारा उसे चार सौ रूपये में बेच देना सोमा के शब्दों में 'बेटी का क्या भरोसा ? वह तो है ही पराये घर के लिए। बहू तो घर में लानी ही थी और फिर उस कर्जे से खेत छुडाने के लिए मुझे बेचना न तो करता क्या ?'[१] फिर ससुराल में उसके साथ पशु की तरह बर्ताव और उसके विधवा होने पर किसी बूढे पंजाबी के हाथ साढे तीन सौ रूपये में बेचने का प्रयास आदि प्रसंगो द्वारा यशपाल जी पारिवारिक सम्बन्धों के खोखलेपन का पर्दापाशो करते हुए पुरूषा वर्ग की हिंस्त्र प्रवृत्तिपर भी प्रहार किया है। ससुराल में सोमा से दिन रात कठोर परिश्रम करवाना 'शोषाण' का ही प्रमाण है। सोमा का सारा जीवन शोषाण का प्रतीक है।

५) महाजनों व्दारा शोषाण --

किसी देहात या पहाडी प्रदेश में सेठ साहुकार के शोषाण से बहुत से लोगों की हालत कितनी दर्दनाक और सौकनाक होती है यशपाल ने इसी तथ्य को यहाँ उद्घाडित किया है। यंत्र युग ने मनुष्य को भी एक यंत्र बना दिया है। जिस समाज में लडकियों को बेचना और खरीदना कानून की दृष्टि से उचित हो उस समाज में रहने वाला हर आदमी जंगली जानवर है,यही बात सोमा के माध्यम से यशपाल ने प्रेक्षेपित की है। सास-ससुर मन्नु साह के माध्यम से सोमा को बेचना चाहते थे। अदालत ने निरपराध धनसिंह को इसीलिए दण्ड दिया था कि उसने एक बेबस,लाचार विधवा सोमा को सहारा दिया था।

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१०।

६) दास्य प्रथा की समस्या --

यशपाल ने अपने उपन्यासों में दास्य प्रथा जैसी जटिल समस्या पर भी प्रकाश डाला है। यशपाल इतिहास के उस युग को भी लक्ष्य मानते है जो यथार्थ होकर भी मर्यादा के नामपर छिपाया गया था।

'समाज में व्याप्त विसंगतियों तथा अनैतिकताओं को बताते हुए यशपाल ने पूरे समाज और प्रशासन से यह प्रश्न किया है कि यह कौन सी नैतिकता है ? यदि उसके पास इसका उत्तर नहीं है तो जिस समाज और शासन व्यवस्था के अन्तर्गत यह सब हो रहा है, उसे बदल डालना चाहिए। तभी जीवन को सही अर्थों में नैतिकता मिल सकेगी।' [१]

७) ड्राइवरों के शोषण की समस्या --

प्रस्तुत उपन्यास में ड्राइवरी पेशे की समस्या उजागर की है। उपन्यास का मुख्य पात्र धनसिंह एक साधारण लोरी ड्राइवर था। ड्राइवरी जीवन देखिए - 'ड्राइवर का क्या है ? मौसमी पंछी है। हर वक्त जान-जोखिम में। इश्क का मर्ज पालना गरीब ड्राइवर के बूते की बात नहीं।' [२]

शोषण मनुष्य की सहज प्रवृत्ति सी बन गई है। इसीलिए एक शोषक दूसरे शोषक का साथ देता है। यह दोन्होंही मजदूरों, नौकरों के शत्रू है। अंग्रेजो के शासन में नोकरशाही ड्राइवरों आदि श्रमिक वर्ग पर किस प्रकार अत्याचार करती थी, इस सम्बन्ध में धनसिंह का उदाहरण ध्यातव्य है।

मजदूर यूनियनों का जन्म तब होता है, जब मालिकों द्वारा मजदूरों पर अत्याचार एवं अन्याय होने लगता है।

---

१ डॉ. पारसनाथ मिश्र - मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल - पृ. २३१।

२ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ. ६९।

८) फिल्म उद्योग में शोषण की समस्या --

फिल्म उद्योग में नीचे से ऊपर तक शोषण भ्रष्टाचार और अनैतिकता व्याप्त है। फिल्म-जगत ऊपर से जितना आकर्षक लगता है, उतना ही अन्दर से खोखला और गद्दाहै। बाहर से यह एक सुंदर दिखावा या दृश्य है लेकिन अंदर ही अंदर इसे दिमक चाट रही है। यही सच्चाई है, यथार्थ है। लेखक ने पहाडन के माध्यम से फिल्मी दुनिया पर भी प्रकाश डाला है। वर्तमान संघर्ष और मानसिक चिंताओं के युग में सिनेमा केवल एक मनोरंजन की वस्तु बनकर रह गयी है। हमारे दैनिक जीवन पर सिनेमा का प्रभाव कितना हावी हो चुका है इसका अनुमान सिनेमाग्रह में भीड, फिल्म अभिनेत्रियों के फॅशन का वास्तविक जीवन में प्रयोग और फिल्मी माहौल से जुडे रहने की अभिलाषा यह सब इसी का परिणाम है।

पहाडन सोमा को सलाह देते हुये बनवारी समझाता है 'सिनेमा बहुत भले लोगों की जगह नहीं है, पर दूसरी तरह की बरबादी से बहुत अच्छी है।'[१] दुनिया में नेक बनाने के लिए बहुत बडी किंमत चुकानी पडती है। कई बार आदमी मिट जाता है। इससे स्पष्ट है कि, शोषण का अधिकार पाने के लिए संसार के सभी क्षेत्रों में प्रतिद्वन्द्विता मची हुई है। फिल्म उद्योग में चल रहे भ्रष्टाचार और अनैतिकता को दूर हटाना चाहिए यही यशपाल जी का लक्ष्य है।

९) अनैतिकता की समस्या --

शोषण की तरह अनैतिकता भी हर जगह व्याप्त है। अनैतिकता वास्तव में पूँजीवादी युग की देन है। अनैतिकता निर्धन परिवारों की अपेक्षा धनी तथा उँचे परिवारों में जादा पनपती है। यशपाल ने अनैतिकता पर कडा प्रहार किया है। समाज में व्याप्त इस अनैतिकता की बुराई को पहचानने के लिए समाज में

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ. ११८।

वर्णित दो परिवारोंको जानना जरूरी है। एक पूँजीवादी तथा दूसरा निर्धन वर्ग यशपाल जी ने सोमा और मनोरमा इन दोन्हों के माध्यम से इस पर गहरा प्रकाश डालाहै। सोमा निर्धन परिवार की होने के कारण बाप मजबूरी में उसे बेच देता है। बाप समझता है कि, बेटी पराया धन है, उसे बेचकर बहू घर लाये तो वह घर का भार संभल सके। और सोमा के ससुराल वाले सोमा को गाँव के महाजन के माध्यम से इसीलिए बेच देना चाहते है क्योंकि, अपनी गर्दन महाजन के पंजो से छूड़ा सके। दूसरी ओर सुतलीवाला नारी की स्वतंत्रता पर विश्वास करता है तो दूसरी तरफ बड़े बड़े सेठों को अपने जाल में फँसवाकर अपना काम निकलवाने के लिए अपनी खुद की पत्नी मनोरमा को उन सेठों को रिझाने का साधन बनाना चाहता है और मनोरमा अपनी अनिच्छा व्यक्त करती है तो उस पर कुल्टा होने का आरोप लगाकर उसे घर छोडने और तलाक देने पर मजबूर करता है।

यशपाल निर्दोष सजायाफता धनसिंह के माध्यम से समाज के खोखले आदर्श और कानून व्यवस्था की विसंगति और विडम्बना पर कुठराघात करते है। धनसिंह जुर्म न करते हुअे भी खुसुरवार था क्योंकि वह सजा भोग चुका था इसीलिए समाज की दृष्टिसे मुजरिम है।

यशपाल भूषण के माध्यम से यह कहते है कि, भद्र समाज में सब कुछ सुख सुविधाएँ उपलब्ध है फिर वहाँ अनैतिकता क्यों होती है ? परिवार की संपन्नता जहाँ अधिक गहरी हो वहाँ अनैतिकता पनपती है। पूँजीवादी समाज में वह अधिक पायी जाती है इसी वजह से इसकी कुछ हवा गरीबों को भी लग जाती है। चिंगारी जलकर शोला बन जाती है। अर्थात गरीबों में काफी पयमाने पर अनैतिकता पायी जाती है।

१०) कानून व्यवस्था व्दारा शोषण --

यशपालनेनिर्दोष धनसिंह के माध्यम से समाज के खोखले आदर्शों और कानून व्यवस्था की विसंगति पर कडा प्रहार किया है।

किसी भी समाज में पुलिस की उपयोगिता समाज की रक्षा एवं सेवा के लिए होती है। परन्तु समाज में उसकी स्थिति रक्षक की न रहकर भक्षक की हो गयी है इस बातको यशपाल को चिन्ता सताती है। पुलिस व्दारा हवालात में सोमा के साथ किया गया अन्याय,अत्याचार इस प्रकार के शोषण का अच्छा प्रमाण है।

धनसिंह तो शुरु से अंत तक पुलिस के हातकंडो का शिकार होता है। आरम्भ में पुलिस से बचकर भागनेवाला धनसिंह अंत में जब पुलिस का शिकार बनता है, तो ऐसा महसूस होता है कि,जैसे कोई चोर भाग रहा है, पुलिस उसके पीछे लगी हो।

निष्कर्ष

'मनुष्य के रूप' इस उपन्यास में यशपाल का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि, तत्कालीन समाज में चल रहे घटनाओं को और समाज में रूढीगत व्यवस्थाओं को यहाँ अंकित किया है।

यशपाल सोमा और धनसिंह के प्रेम के संबंध में शास्त्रीयसन्तुलन के सिध्दान्तों की स्थिरता मानते है। सन्तुलन के अभाव में अनेक समस्याएँ उद्भूत होती है। प्रेम रहित जीवन निर्जीव है और जीवन में प्रेम का अधिक्य जीवन के लिए घातक हो सकता है। दूसरा यह की सब चीजों की तरह जीवन में प्रेम की गति भी द्वंद्वात्मक होती है। जिस सोमा ने धनसिंह के लिए घर त्याग दिया, पुलिस तक को आत्मसमर्पण किया उसी सोमा ने अभिनेत्री बनने पर सुख और ऐश्वर्य के लिए धनसिंह को पहचानने से इन्कार कर दिया। यशपाल जी ने सोमा के माध्यम से एक विधवा नारी की मजबूरी और आत्मनिर्भरता को इस उपन्यास के जरिए प्रस्तुत कर विधवा नारीयों को संघर्ष और आत्मनिर्भरता के लिए प्रावृत्त किया है। फिर भी सोमा इस उपन्यास में सहानुभूति का ही पात्र बन गयी है। क्योंकि यशपाल जी का यह स्पष्ट मत है कि समाज में अनैतिक कार्यों के लिए केवल स्त्रियों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। गीतकार नीरज ने ठीक कहा है।

'यूं न इतराओ सफेदी देखकर अपनी
हर धूली चादर गुनाह की कमाई है।'[१]

लेखक चाहता है कि, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण से मनुष्य की मुक्ति हो। समाज में हर एक का समान अधिकार हो।

सोमा के माध्यम से यशपालने समाज में व्याप्त अनैतिकताओं को प्रक्षेपित कर समाज को जागरूक रहने की सलाह दी है। पुरुष के फौलादी

---

१ प्रो. प्रवीण नायक - यशपाल का औपन्यासिक शिल्प - पृ.२५१।

शिकंजे से नारी की मुक्ति के लिए क्रांति की आवश्यकता है ।

यशपाल जी के उद्देश्य को नारी चरित्र की दृष्टिसे देखने के बाद राष्ट्रकवि की निम्नलिखित पंक्तियाँ सहज ही मन में गूँज उठती है ।

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दूध और आँखो में पानी ।' [१]

समस्या के समाधान के रूप में मनोरमा का जीवन प्रस्तुत किया गया है । मनोरमा का स्वतंत्र और स्वावलम्बी जीवन नारी जीवन के लिए प्रेरणा बनेगा ।

मार्क्सवादी यशपाल भूषाण के जरिए यह सिध्द करना चाहते है कि भावी समाज की संरचना के लिए भद्रसमाज को आदर्श नहीं बनाया जा सकता क्योंकि समाज स्वयं अनैतिकता की नींव पर खडा है । यशपाल अपना दृढविश्वास व्यक्त करते है -- ' सर्व हारा - वर्ग की संस्कृति,भद्रसमाज की संस्कृति से अधिक विकसित होगी ।

'मानव के परिस्थिति जन्य विविध रूपों का प्रदर्शन ही लेखक का इस उपन्यास लिखने के पीछे उद्देश्य है ।' नारी की परम्परागत संस्कारों से मुक्ति एवम् उसकी आत्मनिर्भरता का प्रतिपादन ही ' मनुष्य के रूप ' उपन्यास का लक्ष्य है । और लेखक इस लक्ष्य प्राप्ति में पूरी तरह सफल नजर आते है ।

---

१ मैथिलीशरण गुप्त - यशोधरा - पृ.४७ ।